पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना के अंतर्गत किसानों को क्षमता विकास के लिए दिया गया प्रशिक्षण

जागरण होशंगाबाद। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून उत्तराखंड द्वारा बानापुरा वन परिक्षेत्र के विभिन्न गांवों बांसपानी, घोघरा, भवांदा, पीपलगोटा, नयागांव, जोंधल व बानापुरा में सतत भूमि उत्पादकता हेतु एकीकृत कृषि विकास विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें गांवों के किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को विभिन्न एकीकृत कृषि प्रणालियों जैसे कृषि-बागवानी, कृषि-वानिकी, कृषि-चारागाह विकास आदि पर प्रशिक्षण दिया गया। कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जोनल कृषि अनुसंधान केंद्र पवारखेडा के कृषि वैज्ञानिकों डॉ. विनोद कुमार, परियोजना प्रभारी, एकीकृत कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना एवं विनोद जाट व दीपक खांडे द्वारा किसानों को मिट्टी उपजाउ बनाने की विधियां, उच्च गुणवत्ता वाली स्थानीय बागवानी एवं कृषि फसल प्रजातियों के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। वैज्ञानिकों ने बताया कि कैसे एक ही खेत में विभिन्न तरह की कृषि, बागवानी, वानिकी गतिविधियां चलाकर किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि एकीकृत कृषि से जैव विविधता का संरक्षण होगा एवं किसान आत्मनिर्भर बनेंगे। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बानापुरा वनपरिक्षेत्र के अंतर्गत उपयुक्त विभिन्न कृषि, बागवानी व वानिकी फसलों की उच्च गुणवत्ता वाली प्रजातियों के बारे में विस्तृत रूप से किसानों को बताया गया। साथ ही उनके द्वारा कम पानी वाली जगहों पर उचित तकनीकि से फसल उगाने के तरीकों के बारे में भी बताया गया। वैज्ञानिकों द्वारा चने की फसल में लगने वाली चने की इल्ली के जैविक प्रबंधन के बारे में किसानों को प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षक के तौर पर शामिल बागवानी विशेषज्ञ एस.के. महाल्हा द्वारा किसानों को जैविक कृषि पद्धतियों के बारे में प्रशिक्षित किया। श्री महाल्हा द्वारा किसानों को फलों की फसलों को लगाने एवं कटिंग/ग्राफ्टिंग द्वारा फलों के पौधे तैयार करने की विधि के बारे में विस्तृत रूप से बताया। श्री महाल्हा द्वारा जैविक कीट नियंत्रण विषय पर किसानों को प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून से आए परामर्शदाता डॉ. सुनील प्रसाद ने विश्व बैंक से वित्त पोषित परियोजना पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोना के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। डॉ. प्रसाद ने बताया कि कृषि उद्यमों जैसे कृषि फसल, पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि वानिकी को एकीकृत कर किसानों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। जिससे भूमि का अधिक से अधिक उपयोग होगा। परिवार के लिए संतुलित पौष्टिक आहर मिलेगा एवं किसान अपने उत्पादों को बाजार में बेचकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे। डॉ. प्रसाद द्वारा बताया गया कि मुनगा (सहजन), अलसी एवं मूंग जैसी फसलों की खेती किसानों को अधिक लाभ दे सकती है। इन फसलों से आवश्यक पोषक तत्वों की भी आपूर्ति होगी तथा यह फसलें कुपोषण के उन्नमूलन में भी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में दीपक पाल द्वारा जैविक कीटनाशक (अमृतपानी) बनाने की विधि का प्रदर्शन कर किसानों को इसको बनाने की व इसके उपयोग करने के बारे में विस्तृत रूप से बताया। घरेलू सामग्री से बनने वाला यह कीटनाशक (अमृतपानी) पर्यावरण, जैव विविधता संरक्षण एवं जल संरक्षण हेतु अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह कीड़ों को फसलों से दूर कर देता है साथ ही इसके उपयोग से रासायनिक कीटनाशकों की तुलना में कम पानी लगता है। प्रशिक्षण में दिग्विजय द्वारा एकीकृत कृषि विकास के विभिन्न घटकों के बारे में जानकारी दी गई। सतीष, मालतीबाई, रामगोपाल, वन विभाग के अरविंद निरंजन, दिलीप सैनी, राममूर्ति एवं केएल पाल मौजूद रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग के उप मण्डल अधिकारी सिवनी मालवा, वन परिक्षेत्र अधिकारी बानापुरा, सरपंच मालतीबाई, केएल पाल एवं श्रीराम मूर्ति द्वारा विशेष सहयोग दिया गया। इन प्रशिक्षणों में आये कृषकों को उन्नत किस्म की फसलों एवं सब्जियों का बीज भी निःशुल्क वितरण किया गया एवं कृषकों की समस्याओं का भी मौके पर निराकरण किया गया।